अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : द्वितीय – जैन धर्म प्रवेशिका (परीक्षा 17 जुलाई, 2022)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(a) समस्त मंगलों में भी प्रथम मंगल कहा गया है-
(क) नवकार मंत्र (ख) गुरु वन्दन सूत्र
(ग) इर्यापथकि सूत्र (घ) आत्म शुद्धि सूत्र (क)

(b) गुरु वंदन सूत्र का प्रयोजन है-
(क) गुरु वन्दना (ख) धर्मवन्दना
(ग) देव वन्दना (घ) आत्म वन्दना (क)

© कायोत्सर्ग के संकल्प करने का पाठ है-
(क) ईर्यापथिक सूत्र (ख) आत्म-शुद्धि सूत्र
(ग) तीर्थंकर स्तुति (घ) शक्रस्तव सूत्र (ख)

(d) आध्यात्मिक व्यायाम है -
(क) प्रतिक्रमण (ख) संवर
(ग) सामायिक (घ) ध्यान (ग)

(e) सामायिक में वचन के दोष होते हैं -
(क) 10 (ख) 12
(ग) 20 (घ) 05 (क)

(f) सामायिक पारते समय काउस्सग्ग किया जाता है -
(क) इच्छाकारेणं सूत्र का (ख) लोगस्स का
(ग) करेमि भन्ते का (घ) नवकार मन्त्र का (ख)

(g) काया का दोष नहीं है-
(क) वैयावृत्य (ख) निद्रा
(ग) मल (घ) मुम्मण (घ)

(h) साधु गुणों के धारक होते हैं-
(क) 25 (ख) 27
(ग) 36 (घ) 12 (ख)

(i) रूपी पुद्गल के भेद होते हैं-
(क) 01 (ख) 02
(ग) 03 (घ) 04 (घ)

(j) ''दूसरों की चुगली करना'' पाप है-
(क) अभ्याख्यान (ख) पैशुन्य
(ग) द्वेष (घ) मायामृषावाद (ख)

(k) भगवान पार्श्वनाथ का आठवाँ भव था-
(क) प्राणत देव (ख) अच्युत देव
(ग) स्वर्णबाहु (घ) सहस्रार देव (ग)

(l) धर्म का मूल किसे कहा गया है-
(क) सत्य (ख) अहिंसा
(ग) दया (घ) व्रत (ग)

(m) ''ओम शान्ति शान्ति...'' प्रार्थना के रचयिता हैं-
(क) श्री दर्शनमुनि जी म.सा. (ख) श्री जीतमलजी चौपड़ा
(ग) श्री हस्तीमल जी म.सा. (घ) श्री गौतममुनि जी म.सा. (ग)

(n) उत्तराध्ययन सूत्र के कौनसे अध्याय में ज्ञान प्राप्ति के बाधक कारणों का उल्लेख किया गया हैं-
(क) दसवाँ अध्याय (ख) ग्यारहवाँ अध्याय
(ग) पाँचवाँ अध्याय (घ) तेरहवाँ अध्याय (ख)

(o) सातवाँ महापापी है-
(क) आत्मघाती (ख) विश्वासघाती
(ग) झूठी साक्षी देने वाला (घ) हिंसा में धर्म बताने वाला (घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1 = (15)**

(a) नवकार मंत्र द्रव्य मंगल नहीं, भाव मंगल है। (हाँ)
(b) गमनागमन के दोषों की आलोचना ईर्यापथिक सूत्र से की जाती है। (हाँ)
© सामायिक पारने का पाठ करेमि भन्ते सूत्र है। (नहीं)
(d) नमोत्थुणं के पाठ को प्रणिपात सूत्र भी कहते हैं। (हाँ)
(e) भविष्य के सुख की कामना करना निदान दोष है। (हाँ)
(f) पर्युपासना दो प्रकार की होती है। (नहीं)
(g) कायोत्सर्ग की काल मर्यादा निश्चित नहीं होती है। (हाँ)
(h) पहला णमोत्थुणं सिद्ध भगवन्तों को दिया जाता है। (हाँ)
(I) पुण्य तत्त्व के 9 भेद होते हैं । (हाँ)
(j) व्रत पच्चक्खाण नहीं करे तो संवर होता है। (नहीं)
(k) भगवान पार्श्वनाथ का जन्म विशाखा नक्षत्र में हुआ। (हाँ)
(l) अज्ञान तप कर्म काटने में सहायक है। (नहीं)
(m) 'गजमुनि' शब्द आचार्य हस्ती का पर्याय है। (हाँ)
(n) यतना शब्द का अर्थ 'सावधानी' है। (हाँ)
(o) विनयशीलता ज्ञान प्राप्ति का बाधक कारण है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1 = (15)**

(a)	लेसिया	(क) लोगस्स सूत्र	मसले हो
(b)	संघट्टिया	(ख) सामायिक	पीड़ा पहुँचे जैसा हुआ हो
(c)	पित्तमुच्छाए	(ग) साधु	आत्म-शुद्धि सूत्र
(d)	आइच्चेसु	(घ) पीड़ा पहुँचे जैसा हुआ हो	लोगस्स सूत्र
(e)	आध्यात्मिक व्यायाम	(च) विकथा	सामायिक
(f)	अव्वाबाहं	(छ) 20	पीड़ा रहित
(g)	राज कथा	(ज) पोष कृष्णा एकादशी	विकथा
(h)	27 गुण	(झ) जीतमल जी चौपड़ा	साधु
(i)	संवर तत्त्व भेद	(य) आत्म-शुद्धि सूत्र	20
(j)	षट् द्रव्य	(र) पीड़ा रहित	30
(k)	भगवान पार्श्वनाथ दीक्षा	(ल) मसले हो	पोष कृष्णा एकादशी
(l)	भ. पार्श्वनाथ को केवलज्ञान	(व) 30	चैत्र कृष्णा चतुर्थी
(m)	जरा कर्म देख कर करिये	(क्ष) चैत्र कृष्णा चतुर्थी	जीतमल जी चौपड़ा
(n)	आश्रव रोकने का अमोघ उपाय	(त्र) महापापी	यतना
(o)	बाल हत्या करने वाला	(ज्ञ) यतना	महापापी

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1 = (15)**

(a) मेरे द्वारा 10 प्रकार की विराधना की आलोचना की जाती है। ईर्यापथिक सूत्र
(b) मेरा दूसरा नाम श्री पुष्पदन्तजी भी है। श्री सुविधिनाथ जी
(c) मेरे द्वारा साधक समस्त सावद्य क्रियाओं का त्याग करता है। सामायिक
(d) दूसरे णमोत्थुणं में मेरे स्थान पर ''ठाणं संपाविउकामाणं'' बोला जाता है। ठाणं संपत्ताणं
(e) मैं वचन का एक ऐसा दोष हूँ जिसका अर्थ हँसी-ठठ्ठा करना है। हास्य दोष
(f) मैं काया का एक दोष हूँ, जो अंगों को मोड़ने पर लगता है। आलस्य दोष
(g) मैं नवकार मंत्र का धर्मपद हूँ। णमो
(h) मेरा अर्थ ''काउस्सग्ग खण्डित नहीं होना है। अभग्गो
(I) मेरा गुण पूरण, सड़न, गलन एवं विध्वंसन है। पुद्गलास्तिकाय

(j) मैं चारित्र का पाँचवाँ भेद हूँ। यथाख्यात चारित्र

(k) मेरा समय भगवान महावीर से 250 वर्ष पहले माना जाता है। भगवान पार्श्वनाथ

(l) मैं एक ऐसा ज्ञान हूँ जो प्रभु पार्श्वनाथ को दीक्षा अंगीकार करते ही प्राप्त हो गया था। मनःपर्याय ज्ञान

(m) मैं इस युग का प्रथम अवतार हूँ। भगवान ऋषभदेवजी/आदिनाथजी

(n) मैं शिक्षा प्राप्ति का तीसरा बाधक कारण हूँ। प्रमाद

(o) मेरे गमनागमन करने से व्यक्ति त्रस एवं स्थावर जीवों की हिंसा करता है। अयतना से

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2=(16)

(a) जैन धर्म का प्राण किसे कहा गया है ?

उ. अहिंसा, अनेकान्त, अपरिग्रह, समता एवं वीतरागता

(b) सामायिक व्रत कितने करण एवं योग किया जाता है ?

उ. 2 करण और 3 योग से

© ग्यारहवें एवं तेरहवें गुणस्थान के नाम लिखिए।

उ. उपशान्त मोहनीय गुणस्थान एवं सयोगी केवली गुणस्थान

(d) अंक 33 का भंग लिखिए।

उ. करूँ नहीं, कराऊँ नहीं, अनुमोदूँ नहीं-मनसा, वयसा, कायसा।

(e) श्रावक जी का सातवाँ व्रत लिखिए।

उ. 26 बोलों की मर्यादा करे और 15 कर्मादान का त्याग करे।

(f) आकाशास्तिकाय का गुण एवं दृष्टान्त लिखिए।

उ. अवकाश-पोलर गुण, जगह देने का गुण।
आकाश में विकास, भींत में खूँटी और दूध में पतासा का दृष्टांत

(g) भगवान पार्श्वनाथ को केवलज्ञान की प्राप्ति कैसे हुई ?

उ. छद्मस्थ काल की 83 रात्रियाँ पूर्ण होने के पश्चात् 84वें दिन (चैत्र कृष्णा चतुर्थी) वाराणसी के निकट आश्रमपद उद्यान में घातकी वृक्ष के नीचे, तेले के तप के साथ ध्यानस्थ खड़े प्रभु ने सम्पूर्ण घाती कर्मो का क्षय कर केवलज्ञान-केवलदर्शन को प्रकट कर लिया।

(h) महापापी के अंतिम चार भेदों के नाम लिखिए।

उ. दव (आग) लगाने वाला
हरा-भरा वन काटने वाला
बाल-हत्या करने वाला
सती-साध्वी का शील भंग करने वाला

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(a) वन्दन करने से किस गुण की प्राप्ति होती है ?

उ. वन्दन करने से जीव नीच गोत्र का क्षय करता है और उच्च गोत्र कर्म का बन्ध करता है, फिर वह स्थिर सौभाग्यशाली होता है, उसकी आज्ञा सफल होती है तथा दाक्षिण्यभाव अर्थात् लोकप्रियता को प्राप्त करता है।

(b) सामायिक व्रत ग्रहण करने की विधि लिखिए।

उ. सर्वप्रथम पूँजनी से स्थान को पूँजकर आसन बिछावें। बिना सिला हुआ सफेद चोलपट्टा-दुपट्टा पहनकर, मुख पर मुखवस्त्रिका बाँधकर गुरुदेव को (1) तिक्खुत्तो के पाठ से तीन बार वन्दन करके चउवीसत्थव की आज्ञा लें। (2) नवकार मंत्र, (3) इच्छाकारेणं और (4) तस्स उत्तरी का पाठ बोलें फिर (5) इच्छाकारेणं के पाठ का काउस्सग्ग करें। (6) 'नमो अरिहंताणं' कहकर (7) 'काउस्सग्ग शुद्धि' का पाठ बोलें। फिर (8) लोगस्स का पाठ बोल कर गुरु महाराज विराजमान हो तो उनसे अन्यथा उत्तर-पूर्व दिशा (ईशान कोण) की ओर मुँह करके शासनपति की आज्ञा लेकर स्वयं (9)

'करेमि-भंते' के पाठ से सामायिक लेवें। तत्पश्चात् बायाँ घुटना खड़ा करके (10) दो बार नमोत्थु णं का पाठ बोलें। सामायिक के काल में प्रार्थना, स्तवन एवं सत्साहित्य का स्वाध्याय आदि करें।

(c) णमोत्थुणं पाठ का अन्य नाम एवं प्रयोजन का उल्लेख कीजिए।

उ. 'शक्रस्तव, 'प्राणिपात सूत्र'।
इस पाठ के द्वारा सिद्ध और अरिहन्त देवों की भावपूर्वक अनेक गुणों का वर्णन करते हुए उनकी स्तुति करना तथा उनके गुण हमारी आत्मा में भी प्रकट करना, मुख्य प्रयोजन है।

(d) उपयोग के 12 भेदों के नाम क्रम से लिखिए।

उ. 5 ज्ञान- मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यायज्ञान और केवलज्ञान। 3 अज्ञान- मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान और विभंगज्ञान। 4 दर्शन- चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन और केवल दर्शन।

(e) एकेन्द्रिय के 22 भेद लिखिए।

उ. पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, और वायुकाय, इन चार प्रकार के स्थावर जीवों के प्रत्येक के सूक्ष्म और बादर तथा अपर्याप्त और पर्याप्त - ऐसे चार भेदों से कुल 16 भेद हुए। वनस्पतिकाय के सूक्ष्म, साधारण और प्रत्येक, इन तीन के अपर्याप्त और पर्याप्त, ये 6 भेद हुए। इस प्रकार एकेन्द्रिय के कुल 22 भेद हुए।

(f) निर्जरा तत्त्व के 12 भेद क्रम से लिखिए।

उ. 1. अनशन, 2. ऊनोदरी, 3. भिक्षाचर्या, 4. रसपरित्याग, 5. कायक्लेश, 6. प्रतिसंलीनता, 7. प्रायश्चित्त, 8. विनय, 9. वैयावृत्त्य, 10. स्वाध्याय, 11. ध्यान और 12. व्युत्सर्ग (कायोत्सर्ग)।

(g) ''भीतर.....किनारो।'' इस प्रार्थना की कड़ी को पूर्ण करके लिखिए।

उ. भीतर शान्ति बाहिर शान्ति, तुझमें शान्ति मुझमें शान्ति।
सब में शान्ति बसाओ, सब मिल शांति कहो.....2 ।।ओम।।2।।
विषय कषाय को दूर निवारो, काम क्रोध से करो किनारो।

(h) 'किसी.....जतन हजार है।'' इस प्रार्थना की कड़ी को पूर्ण करके लिखिए।

उ. किसी को मारे किसी को लूटे, काम करे अन्याई का।
जैसा करेगा, वैसा भरेगा, लेखा है राई राई का।
नहीं छोटे बड़े की दरकार है, चाहे कर ले तू जतन हजार हैं।

कक्षा : द्वितीय – जैन धर्म प्रवेशिका (परीक्षा 16 जुलाई, 2017)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) आठ कर्मों से मुक्त निरंजन निराकार अशरीरी प्रभु है-

(क) अरिहंत देव (ख) सिद्ध देव

(ग) सरागी देव (घ) इनमें से कोई नहीं (ख)

(b) गमनागमन के दोषों की शुद्धि की जाती है -

(क) आत्मा शुद्धि सूत्र (ख) कायोत्सर्ग शुद्धि सूत्र

(ग) इर्यापथिक सूत्र (घ) तीर्थंकर स्तुति सूत्र (ग)

(c) सुविधि नाथजी का दूसरा नाम है -

(क) पुष्पदंतजी (ख) शांतिनाथजी

(ग) कंथुनाथजी (घ) चन्दाप्रभुजी (क)

(d) अजीव तत्त्व के भेद हैं-

(क) 3 (ख) 4

(ग) 14 (घ) 10 (ग)

(e) मोक्ष तत्त्व के भेद हैं-

(क) 04 (ख) 02

(ग) 06 (घ) 12 (क)

(f) भगवान पार्श्वनाथ ने 300 पुरुषों के साथ दीक्षा कब ग्रहण की-

(क) पोष शुक्ला एकादशी (ख) पोष कृष्णा एकादशी

(ग) पोष शुक्ला चतुर्दशी (घ) पोष कृष्णा चतुर्दशी (ख)

(g) भगवान पार्श्वनाथ का निर्वाण हुआ था-

(क) श्रावण शुक्ला अष्टमी (ख) श्रावण कृष्णा अष्टमी

(ग) श्रावण शुक्ला चतुर्थी (घ) श्रावण कृष्णा चतुर्थी (क)

(h) महापापी होता है-

(क) आत्मघाती (ख) कृतज्ञ

(ग) साक्षी देने वाला (घ) आग बुझाने वाला (क)

(i) शिक्षा प्राप्ति में बाधक कारण नहीं है-

(क) धन (ख) अभिमान

(ग) प्रमाद (घ) रोग (क)

(j) जिन के उपासक कहलाते हैं-

(क) देव (ख)अरिहंत

(ग) जैन (घ) तीर्थंकर (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1=(10)**

(a) बिना उपयोग बोलना निरपेक्ष दोष होता है। (हाँ)

(b) सामायिक में आहार संज्ञा का सेवन किया जाता है। (नहीं)

(c) दूसरी बार नमोत्थुणं का पाठ बोलने पर 'ठाण संपताणं' के स्थान पर 'ठाणं संपाविउकामाणं' बोलते हैं। (हाँ)

(d) झूंठा कलंक लगाना पैशून्य पाप है। (नहीं)

(e) आकाशास्तिकाय अनन्त प्रदेशी हैं। (हाँ)

(f) 'जरा कर्म देखकर करिए' प्रार्थना के रचयिता श्री जीतमलजी चौपड़ा है। (हाँ)

(g) हिंसा में अधर्म बताने वाला महापापी होता है। (नहीं)

(h) यतना से पापकर्म का बंध नहीं होता है। (हाँ)

(i) अप्रमाद शिक्षा प्राप्ति का बाधक कारण है। (नहीं)

(j) श्रोत्रेन्द्रिय के तीन विषय व 12 विकार होते हैं। (हाँ)

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1=(10)**

(a) मैं आसन बार-बार बदलने से लगने वाला सामायिक का दोष हूँ। चलासन

(b) मेरा दूसरा नाम प्रणिपात सूत्र है। शक्रस्तव/नमोत्थुणं

(c) मैं शरीर को स्थिर, वचन को मौन तथा मन को एकाग्र रखकर किया जाता हूँ। कायोत्सर्ग

(d) मेरे द्वारा सावद्य योगों के त्याग की प्रतिज्ञा ग्रहण की जाती है। करेमि भंते

(e) मेरे द्वारा जलते हुए नाग-नागिन का उद्धार किया। पार्श्वनाथ

(f) मैं ओम शांति-शांति..... प्रार्थना का रचयिता हूँ। आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा.

(g) मैं शिक्षा प्राप्ति का दूसरा बाधक कारण हूँ। क्रोध

(h) मैं सरोवर की पाल तोड़ने वाला महापापी का भेद हूँ। आठवाँ

(i) मैं चारित्र को दूषित होने से बचाती हूँ। यतना

(j) मैं पच्चीस बोल का तीसरा भेद हूँ। काया छह

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। 14x2=(28)

(a) **नवकार मंत्र किस भाषा में है ?**

उ **प्राकृत भाषा (अर्ध मागधी प्राकृत)**

(b) **आचार्य किसे कहते हैं ?**

उ चतुर्विध संघ के वे श्रमण, जो संघ के नायक होते हैं और स्वयं पंचाचार का पालन करते हुए साधु-संघ में भी आचार पालन कराते हैं, उन्हें आचार्य कहते हैं। ये 36 गुणों के धारक होते हैं।

(c) **'तस्स उत्तरी' पाठ का दूसरा नाम क्या है ?**

उ **आत्मशुद्धि सूत्र/ उत्तरीकरण सूत्र**

(d) **'अबहुमान दोष' का क्या अर्थ है ?**

उ **भक्तिभावपूर्वक सामायिक नहीं करना।**

(e) **सामायिक के कोई चार उपकरण लिखिए।**

उ 1 बैठने हेतु सूती या ऊनी आसन। 2 पहनने और आढ़ने के लिए बिना सिले हुए दो सूती वस्त्र। 3 मुँहपत्ती। 4 पूँजनी। 5 स्वाध्याय हेतु धार्मिक पुस्तकें आदि। महिलाओं के लिए सादे वस्त्र व अन्य उपकरण ऊपर लिखे अनुसार।

(f) **'धम्मवर चाउरंत चक्कवट्टीणं' का अर्थ लिखिए।**

उ **चारों गति का अंत करने वाले धर्म चक्र का प्रवर्तन करने वाले।**

(g) **तीन दृष्टियों के नाम लिखिए।**

उ **1 सम्यक् दृष्टि 2 मिथ्या दृष्टि 3 मिश्र दृष्टि।**

(h) **पुद्गलास्तिकाय को गुण की अपेक्षा से समझाइए।**

गुण से- पूरण, गलन, सड़न, विध्वंसन गुण।

(i) **रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-**

उ बारह घड़ी तक बैलों को बांधा, छीका लगा दिया दाने को।

बारह मास तक ऋषभ प्रभु को, आहार मिला नहीं खाने को।

(j) **रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-**

उ विषय कषाय को दूर निवारो, काम क्रोध से करो किनारो।

शांति साधना यों हो, सब मिल शांति कहो.....।

(k) **भगवान पार्श्वनाथ ने तीर्थंकर गोत्र का उपार्जन कैसे किया ?**

उ प्रभु पार्श्वनाथ ने चक्रवर्ती स्वर्णबाहु के भव में तीर्थंकर जगन्नाथ के पास दीक्षा ग्रहण कर उग्र तपस्या आदि करते हुए तीर्थंकर गोत्र का उपार्जन किया।

(l) **आठ कर्मों के नाम लिखिए।**

उ 1 ज्ञानावरणीय 2 दर्शनावरणीय 3 वेदनीय 4 मोहनीय 5 आयुष्य 6 नाम 7 गोत्र 8 अन्तराय कर्म।

(m) **कायोत्सर्ग शुद्धि सूत्र लिखिए।**

उ कायोत्सर्ग में आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्याया हो, धर्मध्यान-शुक्ल ध्यान नहीं ध्याया हो, कायोत्सर्ग में मन-वचन-काया चलायमान हुए हो तो तस्स मिच्छामि दुक्खडं।

(n) **महापापी के प्रथम चार भेद लिखिए।**

उ 1 आत्मघाती 2 विश्वासघाती 3 गुरु द्रोही 4 कृतघ्नी

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए : - **14x3=(42)**

(a) **सामायिक में लगने वाले मन के कोई छह दोष अर्थ सहित लिखिए।**

उ 1 अविवेक दोष- विवेक नहीं रखना।

2 यशोवांछा दोष- यशकीर्ति की इच्छा करना।

3 लाभ वांछा दोष- धनादि के लाभ की इच्छा करना।

4 गर्व दोष- गर्व करना।

5 भय दोष- भय करना।

6 निदान दोष-भविष्य के सुख की कामना करना।

7 संशय दोष- सामायिक के फल की प्राप्ति में संदेह करना।

8 रोष दोष- क्रोध करना।

9 अविनय दोष- देव, गुरु, धर्म की अविनय अशातना करना।

10 अबहुमान दोष- भक्तिभावपूर्वक सामायिक न करना।

(b) **अरिहंत व सिद्ध में क्या अंतर है ?**

उ अरिहन्त भगवान चार घाती कर्मों-ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय का क्षय कर चुके हैं। अरिहंत सशरीरी होने से तीर्थ की स्थापना करते हैं, उपदेश देते हैं और धर्म से गिरते हुए साधक को स्थिर करते हैं, जबकि सिद्ध आठ कर्मों (1 ज्ञानावरणीय, 2 दर्शनावरणीय, 3 मोहनीय, 4 अन्तराय, 5 वेदनीय, 6 आयु, 7 नाम, 8 गोत्र) को क्षय करके सिद्ध हो गये और वे सुखरूप

सिद्धालय में विराजमान हैं। वे अशरीरी होने से उपदेश आदि की प्रवृत्ति नहीं करते।

(c) **'इरियावहिया' के पाठ में विराधना कितने प्रकार की है, उनके नाम लिखिए।**

उ 'इरियावहिया' के पाठ की विराधना दस प्रकार की बतलायी हैं, यथा- 1 अभिहया, 2 वत्तिया, 3 लेसिया, 4 संघाइया, 5 संघट्टिया, 6 परियाविया, 7 किलामिया, 8 उद्दविया 9 ठाणाओ ठाणं संकामिया और 10 जीवियाओ ववरोविया।

(d) **दीवोत्ताणं सरणगई पइट्ठाणं अप्पडिहयवरनाणं दंसण-धराणं विअट्टछउमाणं,**

जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं शब्दों का हिन्दी में अर्थ लिखिए।

उ द्वीप के समान रक्षक (आधारभूत)। सरण गई पइट्ठाणं = जीवों के लिए शरण गति, आधार और प्रतिष्ठा देने वाले। अप्पडिय = अप्रतिहत। वर= उत्तम। नाण=ज्ञान। दंसण=दर्शन के। धराणं=धारक। विअट्टछउमाणं=घाती कर्म से रहित। जिणाणं=स्वयं रागद्वेष को जीतने वाले। जावयाणं=दूसरों को जिताने वाले। तिण्णाणं= स्वयं भवसागर से तिरने वाले। तारयाणं-दूसरों को तिराने वाले। बुद्धाणं-स्वयं बोध पाये हुए। बोहयाणं-दूसरों को बोध देने वाले।

(e) **कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।**

वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाण च।। उपर्युक्त पाठांश का हिन्दी में अर्थ लिखिए।

उ कुंथुं अरं च= कुन्थुनाथजी और अरनाथजी को। मल्लिं वंदे = मल्लिनाथजी को वंदन करता हूँ। मुणिासुव्वयं नमिजिणं च = मुनिसुव्रतजी और नमिनाथजी को। वंदामि रिट्ठनेमिं = अरिष्टनेमि जी को वंदना करता हूँ। पासं तह वद्धमाणं च = और पार्श्वनाथजी तथा वर्द्धमानजी को।

(f) **'करेमि भंते पाठ का क्या प्रयोजन है ?**

उ 'करेमि भंते' पाठ से सभी पापों का त्याग कर सामायिक व्रत लेने की प्रतिज्ञा की जाती है। इसे 'सामायिक प्रतिज्ञा' सूत्र भी कहते हैं।

(g) **दस भवनपतियों के नाम लिखिए।**

उ भवनपति के 10 भेद- 1असुरकुमार, 2 नागकुमार, 3 सुवर्णकुमार, 4 विद्युत्कुमार, 5 अग्निकुमार, 6 द्वीपकुमार, 7 उदधिकुमार, 8 दिशाकुमार, 9 पवनकुमार और 10 स्तनितकुमार

(h) **धर्मास्तिकाय को पहचाने जाने वाले द्रव्यादि पाँच बोल समझाकर लिखिए।**

उ 1 द्रव्य से- एक द्रव्य, 2. क्षेत्र से - सम्पूर्ण लोक प्रमाण, 3. काल से- आदि अन्त रहित

4 भाव से - वर्ण नहीं, गंध नहीं, रस नहीं, स्पर्श नहीं, अरूपी, अजीव, शाश्वत्, लोकव्यापी और असंख्यातप्रदेशी है।

5 गुण से- चलन गुण, पानी में मछली का दृष्टांत। जैसे पानी के निमित्त से मछली चलती है, इसी तरह जीव और पुद्गल दोनों धर्मास्तिकाय के निमित्त से चलते हैं।

(i) **12 देवलोकों के नाम लिखिए।**

उ 12 देवलोक- 1 सौधर्म, 2 ईशान, 3 सनत्कुमार, 4 माहेन्द्र, 5 ब्रह्म, 6 लांतक, 7 महाशुक्र, 8 सहस्रार, 9 आणत, 10 प्राणत, 11 आरण और 12 अच्युत।

(j) **पाँच चारित्र के नाम लिखिए।**

उ 1 सामायिक चारित्र, 2 छेदोपस्थापनीय चारित्र, 3 परिहारविशुद्धि चारित्र, 4 सूक्ष्मसम्पराय चारित्र और 5.यथाख्यात चारित्र।

(k) **मेघमाली ने भगवान पार्श्वनाथ को किस प्रकार कष्ट दिया ?**

उ जब पार्श्वनाथ ध्यानस्थ खड़े थे तब सिंह, चीता, मत्त हाथी, आशीविष बिच्छु, सर्प आदि के रूप में अनेक कष्ट दिये। बैताल का रूप धारण कर डराने, धमकाने का प्रयास किया। फिर भी भगवान अडोल एवं समत्वभाव में रहे तो अधिक कुद्ध होकर बादलों की गर्जना कर मूसलाधार वर्षा की। ओले गिरने लगे।

(l) **भगवान पार्श्वनाथ ने कब और कैसे केवल ज्ञान प्राप्त किया ?**

उ छद्मस्थ काल की 83 रात्रियाँ पूर्ण होने के पश्चात् 84वें दिन (चैत्र कृष्णा चतुर्थी) वाराणसी के निकट आश्रमपद उद्यान में घातकी वृक्ष के नीचे, तेले के तप के साथ ध्यानस्थ खड़े प्रभु ने सम्पूर्ण घाती कर्मों का क्षय कर केवलज्ञान-केवलदर्शन को प्रकट कर लिया।

(m) **किसी को मारे .....जतन हजार है। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-**

उ किसी को मारे किसी को लूटे, काम करे अन्याई का।

जैसा करेगा, वैसा भरेगा, लेखा है राई राई का।

नहीं छोटे बड़े की दरकार है, चाहे कर ले तू जतन हजार हैं।

(n) **रसनेन्द्रिय के पाँच विषयों के 60 विकार लिखिए।**

उ तीखा, कड़वा, कषैला, खट्टा और मिठा। ये 5 सचित्त, 5 अचित्त, 5 मिश्र। ये 15 शुभ और 15 अशुभ। इन 30 पर राग और 30 पर द्वेष। इस प्रकार 60 विकार हुए।

कक्षा : द्वितीय – जैन धर्म प्रवेशिका (परीक्षा 29 जुलाई, 2018)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) स्वयं ज्ञानादि पाँच आचार का पालन करते हुए, दूसरों से भी आचार धर्म का पालन कराने वाले होते हैं-
(क) आचार्य(ख) उपाध्याय(ग) साधु(घ) अरिहंत (क)

(b) 'दग' शब्द का अर्थ है -
(क) सचित्त पानी (ख) सचित्त मिट्टी
(ग) सचित्त वनस्पति (घ) कीड़ियों का बिल (क)

(c) चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति का पाठ है -
(क) तिक्खुत्तो का पाठ (ख) ईर्यापथिक सूत्र
(ग) लोगस्स का पाठ (घ) शक्रस्तव सूत्र (ग)

(d) देव, गुरु, धर्म की अविनय-आशातना करना सामायिक का कौनसा दोष है-
(क) रोष दोष (ख) संशय दोष
(ग) अविनय दोष (घ) अबहुमान दोष (ग)

(e) निर्जरा के भेद हैं-
(क) 14 (ख) 04
(ग) 20 (घ) 12 (घ)

(f) आकाशास्तिकाय का भेद नहीं है-
(क) स्कन्ध (ख) देश
(ग) प्रदेश (घ) परमाणु पुद्गल (घ)

(g) पन्द्रहवें बोल में आत्मा के भेद बताये गये हैं-
(क) 06 (ख) 04
(ग) 08 (घ) 12 (ग)

(h) प्रभु पार्श्वनाथ का पाँचवाँ भव था-
(क) हाथी का भव (ख) किरण देव विद्याधर का
(ग) अच्युत देव का (घ) प्राणत देव का (ग)

(i) 'ओम शांति शांति' प्रार्थना के रचयिता हैं-
(क) आचार्य श्री हस्तीमलजी (ख) आचार्य श्री हीराचन्द्रजी
(ग) आचार्य श्री रामलालजी (घ) आचार्य श्री विजयराजजी (क)

(j) शिक्षा-प्राप्ति में सबसे बड़ा बाधक तत्त्व है-
(क) क्रोध (ख)अभिमान
(ग) प्रमाद (घ) रोग (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) गमनागमन के दोषों का शोधन ईर्यापथिक सूत्र से किया जाता है। (हाँ)
(b) अपनी आत्मा को उत्कृष्ट बनाने के लिये कायोत्सर्ग किया जाता है। (हाँ)
(c) दसवें तीर्थंकर का दूसरा नाम श्री पुष्पदन्तजी भी है। (नहीं)
(d) प्रथम बार के नमोत्थुणं से सिद्धों की स्तुति की जाती है। (हाँ)
(e) मोटन दोष का अर्थ अंग मोड़ना है। (नहीं)
(f) रूपी पुद्गल के चार भेद होते हैं। (हाँ)
(g) आकाशास्तिकाय का गुण पोलार गुण होता है। (हाँ)
(h) प्रभु पार्श्वनाथ ने पोष कृष्णा एकादशी को अणगार धर्म स्वीकार किया। (हाँ)
(i) महापापी का ग्यारहवाँ भेद बाल-हत्या करने का है। (हाँ)
(j) यतनापूर्वक कार्य करने से पाप कर्मों का बंध होता है। (नहीं)

प्र.3 मुझे पहचानो :- 10x1=(10)

(a) मैं संसार के सभी मंगलों में सर्वश्रेष्ठ मंगल हूँ। नवकार मन्त्र

(b) मैं एक प्रकार का आध्यात्मिक व्यायाम हूँ। सामायिक

(c) मेरे द्वारा सामायिक में लगे अतिचारों की आलोचना की जाती है। एयस्स नवमस्स का पाठ या सामायिक समापन सूत्र

(d) मैं सामायिक का एक दोष हूँ, जो भविष्य के सुख की कामना करने पर लगता हूँ। निदान दोष

(e) मैं पाप तत्त्व का एक भेद हूँ, जो दूसरों की चुगली करने पर लगता हूँ। पैशुन्य

(f) मैं सोलहवें बोल का 22वाँ दण्डक हूँ। वाणव्यन्तर देव

(g) मैं श्रावकजी का 12वाँ व्रत हूँ। अतिथि संविभाग व्रत

(h) मैंने अनेक प्रकार के रूप धारण करके प्रभु पार्श्वनाथ को कष्ट दिये। मेघमाली असुर

(i) मैं ''जरा कर्म देख कर करिये'' प्रार्थना का रचयिता हूँ। श्री जीतमल जी चौपड़ा

(j) मैं आश्रव द्वारों को रोकने का अमोघ उपाय हूँ। यतना

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। 14x2=(28)

(a) निम्न शब्दों का अर्थ लिखिए-

उ. अव्वाबाहं- पीड़ारहित। अपुणरावित्ति- पुनरागमन रहित।
परियाविया- कष्ट पहुँचाया हो। अभिथुआ- स्तुति किये गये।

(b) स्वछन्द एवं संक्षेप दोष का अर्थ लिखिए।

उ. स्वछन्द दोष- राग-रागनियों से सम्बन्धित गीत गाना।
संक्षेप दोष- पाठ और वाक्यों को छोटे करके बोलना।

(c) आवर्तन तीन बार क्यों किये जाते हैं ?

उ. मन, वचन और काया से वन्दनीय की पर्युपासना करने के लिये तीन बार आवर्तन किये जाते हैं।
मन, वचन और काया से वन्दनीय की पर्युपासना करने के लिये तीन बार आवर्तन किये जाते हैं।

(d) 'लोगस्स' पाठ के दूसरे क्या-क्या नाम हैं ?

उ. लोगस्स' पाठ का दूसरा नाम 'उत्कीर्तन सूत्र' और चतुर्विंशतिस्तव' है।

(e) वंदन करने से किस गुण की प्राप्ति होती है ?
वन्दन करने से जीव नीच गोत्र का क्षय करता है और उच्च गोत्र कर्म का बन्ध करता है, फिर वह स्थिर सौभाग्यशाली होता है, उसकी आज्ञा सफल होती है तथा दाक्षिण्यभाव अर्थात् लोकप्रियता को प्राप्त करता है।

(f) नमोत्थुणं पाठ का क्या प्रयोजन है?

उ. इस पाठ मुख्य प्रयोजन सिद्ध और अरिहन्त देवों की भाव पूर्वक अनेक गुणों का वर्णन करते हुए उनकी स्तुति करना तथा उनके गुण हमारी आत्मा में भी प्रकट करना है।

(g) मोक्ष तत्त्व के भेद लिखिए।

उ. 1. सम्यक् ज्ञान 2. सम्यक् दर्शन 3. सम्यक् चारित्र 4. सम्यक् तप।

(h) तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पाँच प्रकारों में से कोई चार प्रकार लिखिए।

उ. नोट- इनमें से कोई चार-
1. जलचर 2. स्थलचर 3. खेचर 4. उरपरिसर्प 5. भुजपरिसर्प

(i) अंक 33 का भंग लिखिए।

उ. करूँ नहीं, कराऊँ नहीं, अनुमोदूँ नहीं- मनसा, वयसा, कायसा।

(j) भगवान पार्श्वनाथ के जन्म की तिथि एवं नक्षत्र लिखिए।

उ. तिथि- पोष कृष्णा दशमी नक्षत्र- विशाखा नक्षत्र।

(k) भगवान पार्श्वनाथ ने दीक्षा किस तिथि को ली तथा दीक्षा लेते ही कौनसे ज्ञान की प्राप्ति हुई ?
तिथि-

उ. भगवान पार्श्वनाथ ने दीक्षा पौष कृष्णा एकादशी को ली। दीक्षा लेते ही मनःपर्याय ज्ञान की प्राप्ति हुई।

(l) ''प्रातः.....कहो।'' उक्त प्रार्थना को पूर्ण करके लिखिए।

उ. प्रातः समय जो धर्म स्थान में, शांति पाठ करते मधुर स्वर में।
उसको दुःख नहीं हों, सब मिल शांति कहो।।

(m) ज्ञान-प्राप्ति के बाधक कारणों का उल्लेख कौनसे आगम के कौनसे अध्ययन में किया गया है ?

उ. उत्तराध्ययन सूत्र के ग्यारहवें अध्ययन में।

(n) महापापी का आठवाँ भेद लिखिए।

उ. सरोवर की पाल तोड़ने वाला-महापापी।

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - 14x3=(42)

(a) पर्युपासना कितने प्रकार की होती हैं ?

उ. पर्युपासना तीन प्रकार की होती है- 1. नम्र आसन से सुनने की इच्छा सहित वन्दनीय के सम्मुख हाथ जोड़कर बैठना, कायिक पर्युपासना है।
2. उनके उपदेश के वचनों का वाणी द्वारा स्वीकार करते हुए समर्थन करना, वाचिक उपासना है।
3. उपदेश के प्रति अनुराग रखते हुए एकाग्रचित्त रहना, मानसिक पर्युपासना है।

(b) 'तस्सउत्तरी' पाठ में आये हुए 'अभग्गो-अविराहिओ' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उ. तस्सउत्तरी पाठ में 'अभग्गो' का अर्थ है- काउस्सग खण्डित नहीं होना और 'अविराहिओ' का अर्थ है- काउस्सग भंग नहीं होना।
काउस्सग में सर्व विराधना न होना 'अभग्गो' तथा आंशिक विराधना न होना 'अविराहिओ' कहलाता है।

(c) कायोत्सर्ग शुद्धि-सूत्र का पाठ लिखिए।

उ. कायोत्सर्ग में आर्त्तध्यान-रौद्रध्यान ध्याय हो, धर्मध्यान-शुक्लध्यान नहीं ध्याया हो तथा कायोत्सर्ग में मन, वचन और काया चलित हुए हो तो 'तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं'।

(d) ''एवं.....पसीयंतु।'' उक्त पाठ को पूर्ण करके लिखिए।

उ. एवं मए अभिथुआ, विहूयरयमला पहीणजरमरणा।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु।।

(e) सामायिक में काया के लगने वाले प्रथम छः दोष अर्थ सहित लिखिए।

उ. 1. कुआसन दोष- अयोग्य-अभिमान आदि के आसन से बैठना।
2. चलासन दोष- आसन बार-बार बदलना।
3. चलदृष्टि दोष- इधर-उधर दृष्टि फेरना।
4. सावद्य-क्रिया दोष- सावद्य-क्रिया- सीना, पिरोना आदि कार्य करना।
5. आलम्बन दोष- भींतादि का सहारा लेना।
6. आकुंचन प्रसारण दोष- बिना कारण हाथ-पैर फैलाना।

(f) सामायिक से क्या-क्या लाभ हैं ?

उ. सामायिक द्वारा पापों के आश्रव को रोककर संवर की आराधना होती है और सामायिक काल में स्वाध्याय करने से कर्मों की निर्जरा होती है। इसके फल के बारे में कहा गया है कि प्रतिदिन लाख स्वर्ण मुद्राओं का दान करने वाला व्यक्ति एक शुद्ध सामायिक करने वाले की समानता नहीं कर सकता।

(g) छोटी नवतत्त्व के 115 भेद किस प्रकार से बनते हैं ?

उ. जीव के 14, अजीव के 14, पुण्य के 9, पाप के 18, आश्रव के 20, संवर के 20, निर्जरा के 12, बंध के

4 और मोक्ष के 4 भेद। ये कुल 115 भेद होते हैं।

(h) अकर्मभूमिज मनुष्य के 30 भेद लिखिए।

उ. 5 देवकुरु, 5 उत्तरकुरु, 5 हरिवास, 5 रम्यक्वास, 5 हैमवत, 5 ऐरण्यवत। इस प्रकार 30 भेद हुए।

(i) अंक 13 के भंग लिखिए।

उ. अंक 13 के भंग तीन। एक करण और तीन योग से कहना।

1. करूँ नहीं- मनसा, वयसा, कायसा।
2. कराऊँ नहीं- मनसा, वयसा, कायसा।
3. अनुमोदू नहीं- मनसा, वयसा, कायसा।

(j) भगवान पार्श्वनाथ का नाम 'पार्श्वनाथ' क्यों रखा गया ?

उ. जब पार्श्व गर्भ में थे, उस समय अन्धेरी रात्रि में पार्श्व की माता ने पार्श्व के पिता के पास से जाते हुए काले सर्प को देखकर सूचित किया तथा उन्हें प्राण-हानि से बचाया, अतः आपके पिता ने आपका नाम 'पार्श्वकुमार' रखा।

(k) भगवान पार्श्वनाथ के जीवन से मिलने वाली तीन शिक्षाएँ लिखिए।

उ. 1. धार्मिक क्रियाएँ भी विवेक से करनी चाहिये।
2. अज्ञान ही सब दुःखों का मूल है, अतः ज्ञानयुक्त क्रियाएँ करें।
3. तप, मात्र निर्जरा के लिए ही करें। प्रशंसा व प्रदर्शन के लिए नहीं।
4. अज्ञान तप, कर्मों को काटने की अपेक्षा बढ़ाता है अतः ज्ञानपूर्वक तप करें।

(l) ''किसी.....हजार है।'' उक्त प्रार्थना को पूर्ण करके लिखिए।

उ. किसी को मारे किसी को लूटे काम करे अन्याई का।
जैसा करेगा, वैसा भरेगा, लेखा है राई-राई का।
नहीं छोटे बड़े की दरकार है, चाहे कर ले तू जतन हजार है।

(m) 'क्रोध' ज्ञान-प्राप्ति का बाधक कारण है।' इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उ. शिक्षा प्राप्ति में क्रोध एक बाधक कारण है। जो बात-बात में बुरा मानता है एवं क्रोध करता रहता है, वह भी सीखने का पात्र नहीं होता। उसमें सहनशीलता, गम्भीरता एवं क्षमाशीलता होनी चाहिए।

(n) यतना के कोई तीन लाभ लिखिए।

उ. 1. यतनापूर्वक कार्य करने से व्यक्ति अनेक प्रकार की कठिनाइयों से बच जाता है।
2. यतनापूर्वक कार्य करने से समय की बचत होती है।
3. यतनापूर्वक कार्य करने से पाप कर्मों का बंध नहीं होता है।
4.यतनापूर्वक बोलने से व्यक्ति कलह से बच जाता है।
5. यतना से सम्यग् चारित्र का पालन होता है, जिससे संयम में दृढ़ता आती है।
6. यतनापूर्वक कार्य करने से मानसिक शांति प्राप्त होती है।

कक्षा : द्वितीय – जैन धर्म प्रवेशिका (परीक्षा 21 जुलाई, 2019)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) पापों का मूल कारण है-
(क) हिंसा व अधर्म (ख) मोह व अज्ञान
(ग) मिथ्यात्व (घ) कषाय (ख)

(b) अप्रदेशी द्रव्य है-
(क) धर्म (ख) अधर्म
(ग) आकाश (घ) काल (घ)

(c) लौकान्तिक देव का भेद है-
(क) तुषित (ख) प्राणत
(ग) सुभद्र (घ) यशोधर (क)

(d) कायोत्सर्ग के आगार हैं-
(क) 13 (ख) 10
(ग) 12 (घ) 14 (ग)

(e) अरूपी अजीव के भेद हैं-
(क) 30 (ख) 10
(ग) 530 (घ) 560 (ग)

(f) कमठ तापस का जीव मरकर कौनसा देव हुआ-
(क) मेघमाली (ख) संगम
(ग) धरणेन्द्र (घ) किरणदेव (क)

(g) 'भीतादि का सहारा लेना' दोष है-
(क) आलस्य (ख) सावद्यक्रिया
(ग) कुआसन (घ) आलंबन (घ)

(h) ''उड्डुएणं'' का अर्थ है-
(क) चक्कर आना (ख) डकार आना
(ग) जम्हाई आना (घ) अधोवायु निकलना (ख)

(i) सामायिक कितने करण व योग से ली जाती है-
(क) 2 करण 3 योग (ख) 3 करण 2 योग
(ग) 2 करण 2 योग (घ) 2 करण 1 योग (क)

(j) रिट्ठा नरक का गोत्र है-
(क) पंक प्रभा (ख) तमःप्रभा
(ग) धूम प्रभा (घ) बालुका प्रभा (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) दर्शन पाँच होते हैं। (नहीं)
(b) किसी भी जाति का व्यक्ति जैन साधु हो सकता है। (हाँ)
(c) तिक्खुत्तो के पाठ में ''नमंसामि' शब्द नीचे बैठकर दोनों हाथ जोड़ते हुये बोलना चाहिए। (नहीं)
(d) वन्दना एक प्रकार का आध्यात्मिक व्यायाम है। (नहीं)
(e) आलस्य समस्त पापों एवं अनर्थों का पोषक है। (नहीं)
(f) यतना सम्यक्त्व की निर्मलता एवं चारित्र की निर्दोषता का कारण है। (हाँ)
(g) सरोवर में आग लगाने वाला महापापी होता है। (नहीं)
(h) उत्तरीकरण सूत्र से कायोत्सर्ग करने का संकल्प किया जाता है। (हाँ)
(i) प्रभु पार्श्वनाथ का आठवाँ भव स्वर्णबाहु का था। (हाँ)
(j) कायोत्सर्ग की काल मर्यादा 48 मिनट की है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1=(10)**

(a)	रस	(अ) यतना	100 भेद
(b)	विश्वासघाती	(ब) मन का दोष	महापापी
(c)	विवेक	(स) सामायिक समापन सूत्र	यतना
(d)	अनुभाग	(द) काया का दोष	बंध
(e)	भय	(य) ज्योतिषी देव	मन का दोष
(f)	चलदृष्टि	(व) 100 भेद	काया का दोष
(g)	प्रणिपात	(र) 115 भेद	शक्रस्तव
(h)	अतिचार	(ल) बंध	सामायिक समापन सूत्र
(i)	सूर्य	(श) शक्रस्तव	ज्योतिषी देव
(j)	नव तत्त्व	(ष) महापापी	115 भेद

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x1=(10)**

(a)	मेरा दूसरा नाम पुष्पदंत भी है।	सुविधिनाथजी
(b)	आध्यात्मिक साधना में मेरा पद सबसे ऊँचा है।	गुरु
(c)	मैं नागजाति के भवनवासी देवों में धरणेन्द्र नाम का इन्द्र हुआ।	सर्प
(d)	मैं सामायिक का एक ऐसा दोष हूँ, जो बिना उपयोग बोलने पर लगता हूँ।	निरपेक्ष दोष
(e)	मैं महाराज नरवर्मा की पुत्री हूँ।	प्रभावती
(f)	मैं शिक्षा प्राप्ति में सबसे बाधक तत्त्व हूँ।	अभिमान
(g)	मैं संख्यात, असंख्यात व अनन्त प्रदेशी द्रव्य हूँ।	पुद्गलास्तिकाय
(h)	मैं नहीं तो धर्म नहीं।	यतना
(i)	मैं शुभवचन बोलने से होता हूँ।	वचन पुण्य
(j)	मुझसे पाप का क्षय होता है।	नवकार मंत्र

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए: - **12x2=(24)**

(a) निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए-

उ. पयासयरा -प्रकाश करने वाले। लोगपईवाणं -सम्पूर्ण लोक में दीपक के समान।
ण किट्टिय-कीर्त्तन न किया हो। उद्दविया-हैरान किया हो।

(b) मोटन एवं अबहुमान दोष का अर्थ लिखिए।

उ. मोटन दोष-हाथ पैर की अंगुलियों का कड़का निकालना।
अबहुमान दोष-भक्तिभावपूर्ण सामायिक न करना।

(c) ईरियावहिया के पाठ में कितने प्रकार के जीवों की विराधना का उल्लेख है व कौनसे ?

उ. हरियावहिया के पाठ में पाँच प्रकार के जीवों की विराधना का उल्लेख है। एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय।

(d) रति एवं अरति का अर्थ लिखिए।

उ. रति-अरति-पाँच इन्द्रियों के तेईस विषयों में से मनोज्ञ वस्तु पर प्रसन्न होना रति और अमनोज्ञ वस्तु पर नाराज होना अरति है।

(e) मेघमाली देव ने कौन-कौन से तिर्यंचों का रूप धारण कर भगवान पार्श्वनाथ को कष्ट दिया ?

उ. सिंह, चीता, मत्त हाथी, आशुविष बिच्छु और सर्प आदि।

(f) 25 बोलों में से अंतिम बोल लिखिए।

उ. चारित्र पाँच-1. सामायिक चारित्र, 2. छेदोपस्थापनीय चारित्र, 3. परिहारविशुद्धि चारित्र, 4. सूक्ष्मसम्पराय चारित्र? और 5. यथाख्यात चारित्र।

(g) 22वाँ तथा 16वाँ भंग लिखिए।

उ. 22वाँ भंग-करुँ नहीं, कराऊँ नहीं-मनसा,
16वाँ भंग-अनुमोदूँ नहीं-मनसा, वयसा,

(h) जीवन में यतना का महत्त्व सर्वोपरि क्यों है ?

उ. जीवन को सुख पूर्वक जीने के लिए, आत्म-गुणों के रक्षण के लिए तथा मानसिक शान्ति के लिए जीवन में यतना का महत्त्व सर्वोपरि है।

(i) भगवान पार्श्वनाथ ने तीर्थंकर गोत्र का उपार्जन कैसे किया ?

उ. प्रभु पार्श्वनाथ ने चक्रवर्ती स्वर्णबाहु के भव में तीर्थंकर जगन्नाथ के पास दीक्षा ग्रहण कर उग्र तपस्या आदि करते हुए तीर्थंकर गोत्र का उपार्जन किया।

(j) देवों के दण्डक कितने व कौनसे हैं ?

उ. देवों के 13 दण्डक हैं-दस भवनपतियों के दस दण्डक। वाणव्यन्तर देवों का एक दण्डक। ज्योतिषी देवों का एक दण्डक। वैमानिक देवों का एक दण्डक।

(k) ज्ञान सीखने का पात्र कौन नहीं होता है ?

उ. जो बात-बात में बुरा मानता है एवं क्रोध करता रहता है वह ज्ञान सीखने का पात्र नहीं होता।

(l) प्रार्थना को पूर्ण करके लिखिए-

उ. विषय कषाय को दूर निवारो, काम क्रोध से करो किनारो।
शान्ति साधना यों हो, सब मिल शान्ति कहो।।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - **12x3=(36)**

(a) 'णमोत्थुणं-पाठ का क्या प्रयोजन है ?

उ. इस पाठ के द्वारा सिद्ध और अरिहंत देवों की भाव पूर्वक अनेक गुणों का वर्णन करते हुए उनकी स्तुति करना तथा उनके गुण हमारी आत्मा में भी प्रकट करना, मुख्य प्रयोजन है।

(b) आवर्तन देने की विधि को लौकिक उदाहरणों से समझाइए।

उ. आवर्तन देने की विधि के लौकिक उदाहरण जैसे- घट्टी चलाने की क्रिया, चरखा घुमाने की क्रिया, रोटी बेलने का क्रम, वाहनों की गति दर्शाने वाले मीटर जिस क्रम से आगे बढ़ता है, ठीक इसी प्रकार आवर्तन हमें अपने ललाट के मध्य से प्रारंभ करते हुए अपने दाहिने ओर (राइट) ले जाते हुए देने चाहिए।

(c) भगवान पार्श्वनाथ को केवल ज्ञान की उपलब्धि कब, कहाँ और कैसे हुई ?

उ. छदम्स्थ काल की 83 रात्रियाँ पूर्ण होने के पश्चात, 84वें दिन (चैत्र कृष्णा चतुर्थी) वाराणसी के निकट आश्रमपद उद्यान में घातकी वृक्ष के नीचे, तेले के तप के साथ ध्यानस्थ खड़े प्रभु ने सम्पूर्ण घाती कर्मो का क्षय कर केवलज्ञान-केवलदर्शन को प्रकट कर लिया।

(d) दीवोत्ताणं.....मपुणरावित्ति। उक्त पाठ को पूर्ण करके लिखिए।

उ. दीवोत्ताणं, सरणगई पइट्ठाणं अप्पडिहयवरनाण-दंसण-धराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोयगाणं, सव्वण्णूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ -मणंत -मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति

(e) षट द्रव्यों को द्रव्य, क्षेत्र व गुण की अपेक्षा से लिखिए।

उ.

षट् द्रव्य	द्रव्य से	क्षेत्र से	गुण से
धर्मास्तिकाय	एक द्रव्य	सम्पूर्ण लोक प्रमाण	चलन गुण
अधर्मास्तिकाय	एक द्रव्य	सम्पूर्ण लोक प्रमाण	स्थिर गुण
आकाशास्तिकाय	एक द्रव्य	लोकालोक प्रमाण	अवकाश-पोलार गुण
कालद्रव्य	एक काल द्रव्य अनंत द्रव्यों पर प्रवर्ते	अढ़ाईद्वीप प्रमाण	वर्तन गुण
जीवास्तिकाय	अनंत जीव द्रव्य	सम्पूर्ण लोक प्रमाण	उपयोग गुण
पुद्गलास्तिकाय	अनंत द्रव्य	सम्पूर्ण लोक प्रमाण	पूरण, गलन, सड़न,

(f) निर्जरा तत्त्व के भेद लिखिए।

उ. 1. अनशन,2. ऊनोदरी, 3. भिक्षाचर्या, 4. रसपरित्याग, 5. कायक्लेश, 6. प्रतिसंलीनता, 7. प्रायश्चित्त, 8. विनय, 9.वैयावृत्त्य, 10. स्वाध्याय, 11. ध्यान और 120 व्युत्सर्ग (कायोत्सर्ग)

(g) लोगस्स का स्मरण, उत्कीर्तन और जाप करना हम सबका कर्त्तव्य क्यों है ?

उ. लोगस्स के पाठ में भगवान, ऋषभदेव से लेकर (वर्द्धमान) महावीर तक चौबीस तीर्थकरों की स्तुति की गई है। वे हमारे इष्टदेव हैं। अहिंसा और सत्य का मार्ग बताने वाले हैं। वे हमारे परम आराध्य देव हैं। उनका स्मरण करना, उत्कीर्त्तन (उत्कृष्ट गुणगान) करना और जप करना, हम सब का कर्त्तव्य है।

(h) नवकार मंत्र में पहले अरिहंतों को नमस्कार किया गया, परन्तु णमोत्थुणं में पहले सिद्धों को नमस्कार क्यों किया गया ?

उ. नमस्कार में उपकार की प्रधानता होती है, जबकि स्तुति में गुणों की प्रधानता होती है। नवकार मंत्र में जीवों पर उपकार की दृष्टि से पहले अरिहंतों को नमस्कार किया गया, किन्तु 'णमोत्थु णं' में शक्रेन्द्र महाराज ने आत्मिक गुणों में बड़े की दृष्टि से पहले सिद्धों को नमस्कार किया है।

(i) श्रावक जी चौथे और सातवें व्रत में क्या करें ?

उ. चौथे परदार विवर्जन एवं स्वदार संतोष व्रत के श्रावकजी पर-स्त्री सेवन का त्याग करे और अपनी स्त्री की मर्यादा करे। सातवें उपभोग-परिभोग व्रत में श्रावकजी छब्बीस बोलों की मर्यादा करे और पन्द्रह कर्मादान का त्याग करे।

(j) 12 देवलोकों के नाम लिखिए।

उ. 12 देवलोक-1 सौधर्म 2 ईशान 2 सनत्कुमार 4 माहेन्द्र 5 बह्म 6 लांतक 7 महाशुक्र 8 सहस्रार 9 आणत 10 प्राणत 11 आरण और 12 अच्युत।

(k) अयतना से खड़े होने में क्या-क्या हानियाँ होती हैं ?

अयतना से खड़ा होने वाला सचित्त पृथ्वी, पानी, वनस्पति आदि की यतना नहीं कर सकेगा। इधर-उधर वर्जित स्थानों की तरफ देखने से, हाथ-पैर-आँख आदि की चंचलता करने से भी छोटे-बड़े जीवों की हिंसा संभव है, जो पाप कर्मो का बन्ध कराने के साथ ही कटुफलदायक भी होती है।

(l) त्रिपृष्ट.....डार। इस प्रार्थना की कड़ी को पूर्ण करके लिखिए।

उ. त्रिपृष्ट वासुदेव के भव में, दास के कानों में शीशा डला।
कर्म निकाचित बान्धा वीर ने, तीर्थंकर थे पर ना टला।
खड़े ध्यान में वन के मंझार हैं, दिये कानों में कीले डार हैं।